https://artorbit.in/
*Art Orbit - Volume 01, No 03, SEP 2025 PP 01-06 (Total PP 06)*
*ISSN : 3107- 670X (Online)*
Frequency – Monthly
Yadav et al. – Charulata: The Search for Women in Literature and Cinema

# CHARULATA: THE SEARCH FOR WOMEN IN LITERATURE AND CINEMA (**चरुलता: साहित्य और सिनेमा में नारी की तलाश**)

**Arun Kumar Yadav**[a]*, **Dr. Arvind Kumar Rajput**[b]

[a] *Research Scholar, lalit kala sansthan, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra*

[b] *Supervisor, Research Scholar, lalit kala sansthan, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra*

[a]*Email: arun.g.designer@gmail.com*

**Abstract**

**"Charulata: The Search for Womanhood in Literature and Cinema"** Literature and cinema are both mirrors of society; they continually reflect human thoughts, emotions, and struggles. When we look at the portrayal of women in these mediums, it becomes clear that their voices are often suppressed or confined within narrow boundaries. In this context, Rabindranath Tagore's story *Nashtanirh* (*The Broken Nest*) and Satyajit Ray's film *Charulata* offer a different perspective. Here, the protagonist Charulata is not merely a wife or caretaker of the household, but a sensitive, intelligent woman engaged in the search for her own identity and self-expression.

In Tagore's story, Charulata's desires and inner thoughts are not explicitly stated but are revealed subtly through emotions and gestures. In contrast, Satyajit Ray, through his cinematic adaptation, brings these emotions to the forefront — through the camera's gaze, Charulata's silence, and the portrayal of her solitude.

This research seeks to understand how literature (the story) and cinema (the film) each portray a woman's inner desires, loneliness, and self-conflict — her quest for identity. Tagore expresses Charulata's silence through words and narrative pauses, while Ray gives that silence a voice through the visual language of cinema — through camera movements, glances, and moments of quiet introspection.

The study explores how Charulata's "search" is represented in these two distinct artistic mediums and how this search remains relevant even today — resonating with every woman who questions her identity and existence.

"चरुलता: साहित्य और सिनेमा में नारी की तलाश" साहित्य और सिनेमा दोनों ही समाज का आईना होते हैं, जो समय-समय पर इंसान के विचारों, संवेदनाओं और संघर्षों को सामने लाते हैं। जब हम इन माध्यमों में स्त्री की भूमिका को देखते हैं, तो यह साफ़ होता है कि अक्सर उसकी आवाज़ या तो दबा दी जाती है या फिर बहुत सीमित दायरे में दिखाई जाती है। ऐसे में रवींद्रनाथ टैगोर की कहानी "नष्टनीड़" (टूटा हुआ घोंसला) और सत्यजीत रे की फ़िल्म "चरुलता" एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, जहाँ एक स्त्री चारुलता केवल पत्नी या घर की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि सोचने-समझने वाली, अपने अस्तित्व को खोजने वाली एक भावुक और बुद्धिमान इंसान के रूप में सामने आती है।

टैगोर की कहानी में चारुलता की इच्छाएँ और सोच ज़्यादा साफ़ तौर पर नहीं कही गई हैं, बल्कि उन्हें इशारों और भावनाओं के ज़रिए दिखाया गया है। वहीं, सत्यजीत रे ने अपनी फ़िल्म में इन भावनाओं को और खुलकर, साफ़ और गहराई से दिखाया है जैसे कैमरे की नज़र, चारुलता की खामोशी, और उसके अकेलेपन के दृश्य।

यह शोध इस बात को समझने की कोशिश करता है कि कैसे साहित्य (कहानी) और सिनेमा (फ़िल्म) दोनों ही स्त्री के अंदर चल रहे उसकी इच्छाएँ, अकेलापन, और आत्म-संघर्ष और उसकी पहचान की तलाश को अपने-अपने तरीक़े से दिखाते हैं, टैगोर जहाँ कहानी के ज़रिए चारुलता की खामोशी को दिखाते हैं, वहीं रे उस खामोशी को सिनेमा की भाषा में आवाज़ देते हैं कभी कैमरे के मूवमेंट से, कभी उसकी आँखों की झलक से।

यह अध्ययन यह जानने की कोशिश करता है कि साहित्य और सिनेमा जैसे दो अलग-अलग माध्यमों में चारुलता की 'तलाश' को किस तरह से अभिव्यक्त किया गया है, और कैसे यह तलाश आज भी हर उस स्त्री से जुड़ी हुई है, जो अपनी पहचान और अस्तित्व को लेकर सवाल करती है।

***Keywords:*** Charulata, Feminine Identity, Literature and Cinema, Rabindranath Tagore & Satyajit Ray, Search for Self

चरुलता, नारी की पहचान, साहित्य और सिनेमा, रवींद्रनाथ टैगोर और सत्यजीत रे, अस्तित्व की तलाश

---------------------------------------------------------------------------

⁎ Corresponding author.

## भूमिका

चरुलता शब्द संस्कृत मूल के शब्द 'चरु' (सुन्दर, आकर्षक) और 'लता' (लतिका, बेल) के संयोग से बना है, जो नारी की गतिशीलता, लचीलापन और विकासशील पहचान का प्रतीक है। साहित्य और सिनेमा में नारी की तलाश का यह विषय एक बहुआयामी अनुसंधान का विषय है, जो न केवल कला के क्षेत्र में बल्कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक विकास में भी अपनी गहरी पैठ रखता है। भारतीय समाज में नारी की भूमिका सदैव से गतिशील रही है - वह देवी भी है और दासी भी, शक्ति स्वरूपा भी और शोषित भी, पारंपरिक भी और आधुनिक भी। इस द्वंद्व और विविधता ने साहित्य और सिनेमा दोनों को गहराई से प्रभावित किया है।

सिनेमा और साहित्य दोनों ही सामाजिक दर्पण का कार्य करते हैं। जहाँ साहित्य ने नारी के आंतरिक संघर्षों, आकांक्षाओं और सपनों को शब्द दिए हैं, वहीं सिनेमा ने इन्हें दृश्य-श्रव्य रूप में जनमानस तक पहुँचाया है। दोनों माध्यम एक-दूसरे के पूरक और प्रभावक रहे हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में, जहाँ एक ओर साहित्य में नारी विमर्श ने नारी की आंतरिक दुनिया को गहराई से उकेरा है, वहीं सिनेमा ने उसे एक व्यापक सामाजिक प्रासंगिकता प्रदान की है।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और विकास यात्रा

भारतीय सिनेमा के आरंभिक दौर में नारी की भूमिकाओं को लेकर कई चुनौतियाँ और वर्जनाएँ थीं। सिनेमा को शुरुआत में "औरतों के लिए वर्जित और अनैतिक क्षेत्र" समझा जाता था, यहाँ तक कि "सिनेमा देखना भी स्त्रियों के लिए निषिद्ध" था । 1913 में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित "राजा हरिश्चंद्र" जैसी पहली फिल्मों में भी स्त्री पात्रों के लिए पुरुष कलाकारों को ही काम करना पड़ता था, क्योंकि कोई स्त्री अभिनय के लिए तैयार नहीं होती थी।धीरे-धीरे यह स्थिति बदली और कमलाबाई गोखले जैसी महिलाओं ने भारतीय सिनेमा की प्रथम स्त्री कलाकार होने का गौरव प्राप्त किया।

वहीं साहित्य के क्षेत्र में, बीसवीं सदी स्त्री के लिए एक वरदान साबित हुई, जिसने "स्त्री-चिंतन का प्रादुर्भाव" किया । आधुनिक शिक्षा और विचारों ने स्त्री के मन में जल रही मुक्ति की लौ को ज्वाला का रूप दिया। सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी की आवाज़ को बुलंद किया । आज़ादी के बाद तो स्थितियाँ और भी बदलीं, जहाँ "नारी मुक्ति की भावना और अभिव्यक्ति ज्यादा मुखर रूप से उभर कर सामने आयी"।

## सैद्धांतिक आधार और विश्लेषणात्मक ढाँचा

इस शोध का सैद्धांतिक आधार नारीवादी सिनेमा समीक्षा और साहित्यिक feminist criticism पर टिका है। सिनेमा में स्त्री की प्रस्तुति अक्सर "पुरुष की दृष्टि" (male gaze) से होती रही है - यह एक महत्वपूर्ण स्त्रीवादी संकल्पना है, इस सैद्धांतिक ढाँचे के अनुसार, सिनेमा में नारी का चित्रण पुरुष दर्शकों की इच्छाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप किया जाता रहा है, जिसमें नारी की स्वायत्तता और एजेंसी को प्रायः नजरअंदाज किया जाता रहा है।

वहीं साहित्य में नारी विमर्श ने स्त्री-लेखन और स्त्री-दृष्टि को केंद्र में रखा है। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी जैसी लेखिकाओं ने "स्त्री-चिंतन और स्त्री-लेखन को सार्थकता" प्रदान की है, इनके साहित्य में चित्रित स्त्री "पूर्वाग्रहों से मुक्त, स्वतंत्र, शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, सबला तथा निर्णय क्षमता से युक्त" है

## वर्तमान परिदृश्य और उभरते रुझान

21वीं सदी में हिंदी सिनेमा और साहित्य दोनों में नारी का चित्रण काफी विविध और बहुआयामी हुआ है। सिनेमा के क्षेत्र में "महिला-केंद्रित फिल्मों में नायिकाओं के चित्रण की ओर ध्यान देने योग्य बदलाव" आया है। जो "महिला अनुभवों, चुनौतियों और एजेंसी को प्राथमिकता" देते हैं गंगुबाई और मिमी जैसी फिल्मों को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया जाना इस बदलाव का प्रमाण है।

साहित्य के क्षेत्र में भी समकालीन स्त्री रचनाकार "स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत" हैं और "अपनी अस्मिता को पहचान" रही हैं आज की स्त्री रचनाकार "मात्र देह मुक्ति को विमर्श न मान कर वह बौद्धिक रूप से अधिक सक्षम, सामाजिक रूप से ज्यादा सचेत और परिपक्व" है।

**शोध के उद्देश्य और संरचना**

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य साहित्य और सिनेमा में नारी के बदलते प्रतिमानों की तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। विशेष रूप से, यह शोध निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेगा:

1. साहित्य और सिनेमा में नारी की छवि का ऐतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ है?
2. स्त्री लेखन और स्त्री निर्देशन ने नारी के प्रतिनिधित्व को कैसे परिवर्तित किया है?
3. समकालीन साहित्य और सिनेमा में नारी की अभिव्यक्ति के नए प्रारूप क्या हैं?
4. सामाजिक परिवर्तन और नारी प्रतिनिधित्व के बीच क्या सम्बन्ध है?

इस शोध की संरचना छह मुख्य अध्यायों में प्रस्तावित है:

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य और सिनेमा में नारी
2. सैद्धांतिक ढाँचा: नारीवादी समीक्षा के सिद्धांत
3. साहित्य में नारी: मध्यकाल से समकाल तक
4. सिनेमा में नारी: छवियाँ और विमर्श
5. तुलनात्मक विश्लेषण: साहित्य और सिनेमा के समानांतर
6. निष्कर्ष और सिफारिशें

**साहित्य समीक्षा**

**1. साहित्यिक पृष्ठभूमि**

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का उपन्यास “नष्टनीड़” (1871) भारतीय साहित्य में स्त्री-मन की जटिलताओं को प्रस्तुत करने वाला महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। इसमें चरुलता के माध्यम से उस दौर की शिक्षित, संवेदनशील, किंतु परंपरागत सीमाओं में बंधी स्त्री का चित्रण हुआ है। कई विद्वानों का मत है कि बंकिमचंद्र ने यहाँ भारतीय नारी को एक नए रूप में दिखाया—जो केवल गृहस्थी तक सीमित न रहकर भावनाओं, बुद्धि और स्वतंत्र विचारों की आकांक्षी है।

**2. नारी-चेतना पर विमर्श**

सुधीश पचौरी जैसे आलोचकों ने इसे औपनिवेशिक भारत में स्त्री-चेतना के उदय से जोड़ा है। गिरिजा कुमार माथुर और अन्य नारीवादी आलोचकों ने चरुलता के चरित्र को “बंदी गृहिणी” के रूप में व्याख्यायित किया है, जो प्रेम और स्वतंत्रता की तलाश में है।समकालीन नारीवादी विमर्श (सिमोन द बोउवार, शोभा डे, चंद्रा तालपड़े मोहंती आदि के विचारों के संदर्भ में) चरुलता की आकांक्षा को पितृसत्तात्मक समाज की सीमाओं को तोड़ने की कोशिश माना जाता है।

**3. सिनेमा में रूपांतरण**

सत्यजीत रे की फिल्म “चरुलता” (1964) को साहित्यिक कृति के सफलतम फिल्म रूपांतरणों में गिना जाता है। इसमें रे ने कैमरा, दृश्य संरचना और मौन के माध्यम से स्त्री-मन की गहराई को अभिव्यक्त किया। Marie Seton और Chidananda Dasgupta जैसे फिल्म-विशेषज्ञों ने रे की इस फिल्म को भारतीय सिनेमा में स्त्री-अभिव्यक्ति की मील का पत्थर माना है। फिल्म अध्ययन में यह उदाहरण दिया जाता है कि कैसे कैमरा भाषा (जैसे बाइनोक्युलर दृश्य) के द्वारा नारी की अंतर्दृष्टि और अकेलेपन को व्यक्त किया गया। कई आलोचकों का मानना है कि फिल्म ने उपन्यास की स्त्री-दृष्टि को और अधिक संवेदनशील तथा समकालीन बनाया।

**4. तुलनात्मक दृष्टि**

जहाँ उपन्यास में चरुलता की पीड़ा और आकांक्षाएँ शब्दों में बंधी हैं, वहीं फिल्म में दृश्य और ध्वनि उसे अधिक जीवंत रूप देते हैं। साहित्यिक आलोचक मानते हैं कि उपन्यास ने "विचार" दिया और फिल्म ने "अनुभव"। दोनों में मिलकर चरुलता भारतीय नारी की पहचान और उसकी तलाश का प्रतीक बन जाती है।

**5. शोध अंतराल (Research Gap)**

अब तक अधिकांश शोध या तो केवल उपन्यास के साहित्यिक पक्ष पर केंद्रित रहे हैं या फिर फिल्म के तकनीकी पक्ष पर। बहुत कम अध्ययनों ने दोनों को साथ रखकर नारी की तलाश की निरंतरता और बदलाव को विश्लेषित किया है। इसी बिंदु पर आपका शोध नए आयाम खोल सकता है।

**साहित्य और सिनेमा का अलग-अलग अध्ययन**

अब तक हुए अधिकांश शोध बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के नष्टनीड़ उपन्यास पर केवल साहित्यिक दृष्टि से या सत्यजीत रे की चरुलता फिल्म पर केवल फिल्म अध्ययन की दृष्टि से केंद्रित रहे हैं। लेकिन दोनों को मिलाकर, तुलनात्मक और अंतःविषयक (interdisciplinary) दृष्टि से, स्त्री-मन की तलाश का गहन विश्लेषण कम हुआ है।

**नारीवादी दृष्टिकोण की सीमितता**

कुछ अध्ययनों ने चरुलता को नारीवादी प्रतीक के रूप में देखा है, किंतु उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और औपनिवेशिक संदर्भों की गहराई से चर्चा नहीं की गई है। स्त्री-स्वतंत्रता की खोज को केवल भावनात्मक स्तर पर देखा गया, जबकि उसका सामाजिक-राजनीतिक महत्व अभी अधूरा है।

**औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य की उपेक्षा**

उपन्यास और फिल्म दोनों ही उन्नीसवीं शताब्दी के औपनिवेशिक भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। औपनिवेशिक समाज, आधुनिक शिक्षा और पितृसत्तात्मक ढांचे का चरुलता की चेतना पर जो प्रभाव पड़ा, उसका तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

**दृश्य भाषा और स्त्री-मन का संबंध**

फिल्म अध्ययन में कैमरा, मौन और दृश्य-रचना पर चर्चा हुई है, लेकिन इन माध्यमों को स्त्री की आत्म-अभिव्यक्ति से सीधे जोड़कर गहराई से नहीं समझा गया। यह विश्लेषण अभी शैक्षणिक साहित्य में अधूरा है।

**समकालीन संदर्भ का अभाव**

चरुलता का चरित्र आज भी प्रासंगिक है, किंतु समकालीन नारीवादी विमर्श और बदलती स्त्री-भूमिकाओं के संदर्भ में इस पर बहुत कम शोध किया गया है। "आज की स्त्री" और "चरुलता" के बीच की निरंतरता और अंतराल का अकादमिक विश्लेषण अभी आवश्यक है।

**विश्लेषण और लेखन**

1. शुरुआती दृश्य सिनेमाई कविता का एक नमूना है। हम युवा पत्नी चारुलता को अपने घर में एक खिड़की से दूसरी खिड़की पर जाते हुए देखते हैं। वह ओपेरा के चश्मे से खिड़की के पर्दों के पीछे से बाहरी दुनिया की गतिविधियों को देखती है। वह अपने घर में पिंजरे में बंद पंछी की तरह है। हम उसकी जिज्ञासा और बाहरी दुनिया को जानने की इच्छा को महसूस कर सकते हैं।

2. जैसे ही वह घर के अंदरूनी गलियारे में जाती है, हमें उसका बुद्धिजीवी पति दिखाई देता है। वह किताब में इतना खोया हुआ है कि उसकी मौजूदगी का एहसास तक किए बिना ही उसके पास से गुज़र जाता है। वह उसे जाते हुए देखती है और खड़ी होकर पढ़ती है।

3. चारु अपना ओपेरा चश्मा उठाती है और फिर से ऐसे देखती है जैसे वह भी बाहरी दुनिया का ही हिस्सा हो। जैसे ही भूपति नज़रों से ओझल होता है, वह भावशून्य हो जाती है और ओपेरा चश्मा नीचे सरका देती है। कैमरा तेज़ी से पीछे की ओर खींचा जाता है, "जैसे किसी निबंध के अंत में कलम से कोई तड़क-भड़क हो..." सत्यजित रे के शब्दों में। बिना कोई संवाद बोले, हम जानते हैं कि चारुलता अपने अकेलेपन और ऊब के लिए अभिशप्त है।

4. सत्यजित रे अपने किरदारों की अंतरतम भावनाओं और विचारों को बिना किसी चकाचौंध भरी तकनीक और कम से कम संवादों के साथ व्यक्त करते हैं। एक और अद्भुत दृश्य है बगीचे में झूला झूलने वाला दृश्य। इस दृश्य में, चारु, जो अमल के प्रति अपनी भावनाओं को दबा रही थी, हार मान लेती है और खुद से अपने प्यार का इज़हार करती है। यह लगभग आठ मिनट का दृश्य है जिसमें लगभग कोई संवाद नहीं है। अपने नए कैमरे और कथात्मक शैली के साथ, रे ने चारु की मनःस्थिति और उसकी दुविधा को दर्शाया है।

5. सत्यजित रे अपने किरदारों की अंतरतम भावनाओं और विचारों को बिना किसी चकाचौंध भरी तकनीक और कम से कम संवादों के साथ व्यक्त करते हैं। एक और अद्भुत दृश्य है बगीचे में झूला झूलने वाला दृश्य। इस दृश्य में, चारु, जो अमल के प्रति अपनी भावनाओं को दबा रही थी, हार मान लेती है और खुद से अपने प्यार का इज़हार करती है। यह लगभग आठ मिनट का दृश्य है जिसमें लगभग कोई संवाद नहीं है। अपने नए कैमरे और कथात्मक शैली के साथ, रे ने चारु की मनःस्थिति और उसकी दुविधा को दर्शाया है।

**निष्कर्ष**

चरुलता की कहानी हमें यह सिखाती है कि स्त्री केवल घर-परिवार तक सीमित नहीं है, उसके अपने सपने, इच्छाएँ और सोच भी हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उपन्यास नष्टनीड़ में और सत्यजित रे ने फिल्म चरुलता में इस बात को बहुत सुंदर तरीके से दिखाया है। चरुलता का अकेलापन, उसका पढ़ने-लिखने का शौक, दुनिया को देखने की चाह और अमल के साथ उसका बौद्धिक रिश्ता ये सब बताते हैं कि हर औरत को सिर्फ पत्नी या गृहिणी मान लेना सही नहीं है। उसके भीतर भी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है, जो खुद को पहचानना और अपनी दुनिया बनाना चाहता है।

आज के समय में भी चरुलता का संघर्ष हमें छूता है। आधुनिक महिलाएँ पढ़-लिखकर और काम करके आगे बढ़ रही हैं, लेकिन फिर भी उन्हें अपने सपनों और समाज की अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। इस तरह चरुलता की खोज आज भी अधूरी नहीं, बल्कि लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। यही इस शोध का सबसे बड़ा निष्कर्ष है कि स्त्री की असली स्वतंत्रता तभी पूरी होगी जब उसे समाज और परिवार में बराबरी का दर्जा और अपनी पहचान बनाने की आज़ादी मिले।

**साहित्य की दृष्टि से (उपन्यास नष्टनीड़)**: रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने चरुलता को एक संवेदनशील और पढ़ी-लिखी स्त्री के रूप में चित्रित किया है, जो अपने अकेलेपन और अधूरी इच्छाओं के बीच आत्म-खोज करती है। उपन्यास में उसका संघर्ष यह बताता है कि स्त्री की आंतरिक दुनिया भी उतनी ही गहरी है जितनी पुरुष की।

**सिनेमा की दृष्टि से (फिल्म चरुलता):** सत्यजित रे ने कैमरे की भाषा से चरुलता की भावनाओं को और गहराई दी। चरुलता का दूरबीन से बाहर झाँकना, झूले पर किताब पढ़ना और अमल के साथ उसका सहज रिश्ता ये दृश्य उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व और जीवन में नयेपन की खोज को और स्पष्ट बना देते हैं।

इस प्रकार साहित्य शब्दों के माध्यम से और सिनेमा दृश्यों के माध्यम से एक ही बात कहते हैं –कि स्त्री की पहचान केवल पत्नी या गृहिणी होना नहीं है, बल्कि वह अपने सपनों, सोच और स्वतंत्रता के लिए भी जानी जानी चाहिए। आज भी चरुलता का संघर्ष हमें यह याद दिलाता है कि स्त्री की असली स्वतंत्रता तभी पूरी होगी, जब समाज और परिवार उसे बराबरी और अपनी पहचान बनाने का अवसर देंगे।

**संदर्भ सूची (References)**

1. चटर्जी, पर्थ (1995). The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
2. पचौरी, सुधीश (2002). भारतीय स्त्री और साहित्यिक विमर्श. राजकमल प्रकाशन.
3. द बोउवार, सिमोन (1949/2011). The Second Sex. Vintage Books.
4. मोहंती, चंद्रा तालपड़े (1991). Under Western Eyes: Feminist Scholarship and Colonial Discourses. Duke University Press.
5. सेटॉन, मैरी (1971). Portrait of a Director: Satyajit Ray. Indiana University Press.
6. दासगुप्ता, चिदानंद (1992). The Cinema of Satyajit Ray. National Book Trust, India.
7. चट्टोपाध्याय, बंकिमचंद्र (1871). नष्टनीड़. कोलकाता.
8. रे, सत्यजीत (निर्देशक) (1964). चरुलता [फिल्म]. कोलकाता: रूपायन प्रोडक्शंस.
9. https://satyajitray-org.translate.goog/charulata-the-lonely-wife/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=imgs